राजस्थान में लोकगायन के विकास एवं संरक्षण में राजघरानों की भूमिका :

संगीत (गायन) में डॉक्टर ऑफ फिलोसफी की उपाधि प्राप्ति हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंधन

शोधकर्ता:
भावना विजय मानकर
रजिस्ट्रेशन नंबर 8019481810001

शोधपर्यविक्षक:
डॉ. पूजा राठौड़

कला एवं समाज विज्ञान विभाग
श्याम विश्वविद्यालय, लालसोट, दौसा, राजस्थान

२०१९

CamScanner
CamScanner

विषय - सूची

अध्याय क्रमांक	अध्याय का नाम	पृष्ठ क्रमांक
अध्याय प्रथम	शोध विषय का परिचय	01-44
अध्याय द्वितीय	राजस्थान प्रांत की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	45.89
अध्याय तृतीय	राजस्थान में लोक गायन का इतिहास एवं विकास–यात्रा	90-116
अध्याय चतुर्थ	राजस्थान प्रान्त में लोकगायन एवं लोकगीतो के प्रमुख स्वरुप एवं शैलियॉ	117-149
अध्यायपंचम	राजस्थान में लोक गायन के संरक्षण एवं विकास मे राजघरानों, सरकारी प्रयास	150-164
अध्याय षष्टम	सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव	165-167
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	168-176

CamScanner
CamScanner

सार

राजस्थान का आदिकाल का इतिहास बहुत कुछ अज्ञात है। प्राचीन ग्रंथों में समस्त राजस्थान का कोई भौगोलिक नाम नहीं मिलता। प्राचीनकाल में इसके विभिन्न भूखण्ड अलग–अलग नामों से प्रसिध्द थे। वेदों में ब्रह्मर्षि देश, सिंध और मत्स्य आदि के नाम आते है। मत्स्य देश वर्तमान अलवर, भरतपुर और जयपुर आदि क्षेत्रों में स्थित था। 'मत्स्य' के शाब्दिक अर्थ से ऐसा बोध होता है. कि विष्णु के प्रथम अवतार जिस भूभाग में हुए वह ''मास्त्य'' कहलाया। राजपूक्ताना पष्चिम भारतीय मरू देश का मुस्लिम कालीन नाम था, जिसका अर्थ है ''राजपूतों की भूमि'' । ब्रिटिश काल में यह भूभाग १८ देशी राज्यों और दो संसदारियों में विभक्त किया गया था। इस कारण इसे 'राजवाड़ा अर्थात राजाओं की भूमि'' भी कहते थे। ''राजस्थान'' नाम का भी यही अर्थ है, निःसंदेह ''राजस्थान'' नाम स्वतंत्रता के बाद की देन है। इस प्रदेश विशेष के लिये राजस्थान शब्द प्रयुक्त करने का श्रेय कर्नल जेम्स टाड नामक सुप्रसिध्द ब्रिटिश इतिहासकार को जाता है जिन्होंने इस राज्य का नाम राजवाड़ा या राजस्थान दिया, जो राजाओं और उनके राज्यों का सूचक है। इनके द्वारा लिखित ग्रंथ ''एनल्स एण्ड एन्टीक्विटीज आफ राजस्थान'' (१८२९ ई. में प्रथम तथा १८३२ ई. में द्वितीय भाग प्रकाशित हुआ) में इस नाम

CamScanner
CamScanner

का व्यापक उल्लेख किया गया, जो लोकप्रिय बन गया। राजस्थानी लोक गीतों में शास्त्रीय तत्व विषय के स्पष्टीकरण के लिए सर्वप्रथम शास्त्र शब्द को स्पष्ट करना आवश्यक है। सामान्यतः शास्त्र शब्द ''शासनात, शास्त्रम्'' होता है अर्थात् शास्त्र का व्युत्पत्तिपरक अर्थ शासन करने वाला है। यह शासन मनुष्य को श्रेष्ठ कार्य में प्रवृत्त करने तथा दुष्कृतियों से निवृत्त करने वाला (विधि प्रतिषेध परक) होता है। जैसे हमारे प्राचीन वेद स्मृति, धर्मशास्त्र आदि ग्रन्थ मनुष्य को सत् पथ पर प्रवृत्त होने और असत् पथ से निवृत्त होने की प्रेरणा देते है इसीलिये वे शास्त्र कहलाते है। संगीत का मुख्य प्रयोजन प्रवृत्ति निवृत्ति नहीं अपितु रसास्वादन या ''स्दयःपरनिवृत्ति'' है। संगीत के लिये शास्त्र शब्द शासनात् शास्त्रम् को लेकर प्रस्तुत नहीं हुआ है। अपितु शंसनात् शास्त्रम् को लेकर प्रवृत्त हुआ माना जा सकता है। शंसन का अर्थ है किसी गूढ तत्वों का शंसन या प्रतिवादन करने वाले गन्थ ही शास्त्र कहलाते हैं। गीतों के समीकरण में कई पक्षों का सम्मिश्रण अपेक्षित होता है। जहाँ गीत के लिये शब्द प्रथम सीढी है तो स्वर दूसरी सीढी। लय तीसरी सीढी है तो ताल चौथी सीढी। शब्द, स्वर, लय एवं ताल के साथ ही अअन्य अनेक पहलू भी गीत को समृध्दता प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है, जिनमें शास्त्रीयता सर्वप्रमुख है। जब हम किसी गीत में शास्त्रीयता की बात करते हैं तो इसके भी दो पक्ष हमारे सम्मुख आते हैं। प्रथम साहित्य सम्बन्धी, द्वितीय संगीत सम्बन्धी। प्रस्तुत शोध में साहित्य सम्बन्धी, भाव पक्ष का शास्त्रीय विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

CS CamScanner

CS CamScanner

अध्यायीकरण

अध्याय–प्रथम

शोध विषय का परिचय

लोक संस्कृति का इतिहास और विकास

‘लोक संस्कृति अवर्णनीय है, जिस प्रकार ईश्वर की बनायी रचना का वर्णन नहीं किया जा सकता उसी प्रकार लोक संस्कृति की पूर्ण रुपरेखा तैयार करना भी असम्भव सा प्रतीत होता है। लोक और संस्कृति की व्याख्या तब और असम्भव हो जाती है जब सीमित शब्दों में इसकी व्याख्या करनी हो। लोक संस्कृति व्यापक है, अनेक तत्वों का बोध कराने वाली, जीवन की विविध प्रवृत्तियों से सम्बन्धित है, अतः जन मानस, से जुडे सम्पूर्ण अर्थों व भावों में उसका प्रयोग होता है।

लोक संस्कृति का अभिप्राय सर्वसाधारण जनता से है लोक संस्कृति प्रत्येक जन के बीच पनपे पूजा–पाठ, रहन–सहन, पहनावा, खान–पान, गीत, नृत्य, तीज–त्योहार तथा संस्कार आदि प्रत्येक परम्पराओं से है। अतः लोक संस्कृति की व्याख्या व्यक्तिगत न होकर सामूहिक रूप से करे तो अधिक स्पष्ट होगा। दीन–हीन शोषित, दलित, जंगली, जातियाँ, कोल, भील, गोंड (जनजाति), संथाल, नाग, किरात, हूण, शक, यवन, खस, पुक्करा आदि समस्त लोक समुदाय का

CamScanner
CamScanner

मिला–जुला रुप लोक कहलाता है। इन सबकी मिली–जुली संस्कृति, लोक संस्कृति कहलाती है। देखने में इन सबका अलग–अलग रहन–सहन है, वेश–भूषा, खान–पान, पहनावा, ओढावा, चाल–व्यावहार, नृत्य, गीत कला–कौशल, भाषा आदि सब अलग–अलग दिखाई देते है, परन्तु एक ऐसा सूत्र हैं जिसमें ये सब एक माला में पिरोई हुई मणियों की भांति दिखाई देते है, यही लोक संस्कृति है। लोक संस्कृति कभी भी शिष्ट समाज की आश्रित नहीं रही उल्टे शिष्ट समाज लोक संस्कति से प्रेरणा प्राप्त करता रहा है।

बाबु गुलाबराय ने संस्कृति के संदर्भ मे कहा है कि ''संस्कृति शब्द का सम्बन्ध संस्कार से है जिसका अर्थ है, संशोधन करना, उत्तम बनाना, परिष्कार करना।

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के मतानुसार संस्कृति मनुष्य के भूत, वर्तमान और भावी जीवन का सर्वांगपूर्ण प्रकार है, जो हमें जीवन जीने का ढंग सिखाती है।

CamScanner
CamScanner

शोध विषय के उद्देश्यः

''राजस्थान में लोकगायन के विकास एवं संरक्षण में राजघरानों की भूमिका इस विषय पर किया जाने वाला शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों से प्रेरित तथा आधारित है–''

१. राजस्थान प्रान्त में किन किन राजघरानों में लोकगायन का प्रचलन था और क्यों?

२. कौनसे राजघरानों ने लोक गायन को संरक्षण दिया और क्यों?

३. इन घरानों में लोक गायन की कौनसी शैलियाँ एवं स्वरुप प्रचलित थे और क्यों?

४. कौनसी लोक गायन शैलियों अभी भी प्रचलित है और क्यो?

५. कौनसी लोक गायन शैलियों विलुप्त हो गयी और क्यों?

६. क्या राज घरानों में पुरुष एवं स्त्री दोनों लोक गायन का कार्य करते थे?

७. क्या लोक गायन का कार्य केवल कुछ जाति विशेष के लोग ही करते थे अथवा सभी जातियों में लोक गायन प्रचलित था?

८. क्या राजघरानों द्वारा लोक गायकों को विशेष संरक्षण एवं महत्त्व प्रदान किया जाता था और क्यों?

९. वर्तमान में लोक कलाकारो को विकास एवं संरक्षण हेतु राज्य सरकार एवं राजघराने क्या प्रवास एवं कार्य कर रहै है?

१०.कोनसे लोक गायक कलाकारी एवं शैलियों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिध्दि प्राप्त हुई है?

CS CamScanner
CS CamScanner

साहित्य का पुनरावलोकनः

'संगीत मानव की सहज प्रवृत्ति है, संगीत विश्व के कण–कण में समाया हुआ है। मानव को जब शब्द का ज्ञान भी नहीं हुआ था, उस समय भी निःशब्द स्वर लहराता हुआ मानव के हृदय से निकल ही पडता था, अत्यन्त आनन्द के क्षणों या विरह– वेदना के रूप में स्वर फूट पडते थे। शब्दों से भी पहले स्वर ने जन्म लिया अथवा स्वर स्वतः ही उत्पन्न हुआ है''

राजस्थानी लोक गीतों में शास्त्रीय तत्व विषय के स्पष्टीकरण के लिए सर्वप्रथम शास्त्र शब्द को स्पष्ट करना आवश्यक है। सामान्यतः शास्त्र शब्द ''शासनात शास्त्रम'' होता है अर्थात शास्त्र का व्युत्पत्तिपरक अर्थ शासन करने वाला है। शंसन का अर्थ है किसी गूढ तत्वों का शंशन या प्रतिवादन करने वाले गन्थ ही शास्त्र कहलाते है।

गितों के समीकरण में कई पक्षों का सम्मिश्रण अपेक्षित होता है।

भाव पक्ष निम्नलिखित रसों के माध्यम से स्पष्ट किया गया हैः

१) श्रृंगार रस २) विरस ३) विभत्स रस ४) भयानक रस ५) रौद्र रस

६) करुण रस ७) हास्य रस ८) अद्‌भुत रस ९) भक्ति रस १०) वात्सल्य रस

CamScanner
CamScanner

शोध प्रंरचना :

राजस्थान में लोक गायन के इतिहास एवं संरक्षण में राजघरानों की भूमिका विषय पर किया जाने वाला शोध कार्य व्यवस्थित हो सके इसके लिए मैंने एक शोध प्रारूप का निर्माण किया है। मेरे शोध की प्रकृति को देखते हुए अन्वेशणात्मक विवरणात्मक शोध पध्दति का उपयोग किया है। इसके पश्चात शोध से सम्बंधित प्राथमिक तथ्य एवं आंकडे संकलित करने के लिए अवलोकन एवं साक्षात्कार अनुसूची शोध प्राविधि का प्रयोग किया है।

१) शोध की अवधारणा –

२) अन्वेषणात्मक अनुसंधान

३) अन्वेषणात्मक शोध अभिकल्प की विशेषताएं–

- साहित्य खोज
- गहराई से साक्षात्कार
- फोकस समूह
- केस विश्लेषण
- वर्णनात्मक अनुसंधान
- विवरणात्मक अनुसंधान
- वर्णनात्मक अनुसंधान

४) तथ्य–संकलन की प्रविधियों का चुनाव

- निदर्शन का चुनाव
- आंकडो का संकलन एवं उनकी जाँच
- तथ्यों का विश्लेषण

५) प्रतिवेदन (रिपोर्ट) का पस्तुतीकरण

- प्राथमिक तथ्य को एकत्रिक करने के स्त्रोत
- सर्वेक्षण
- प्रश्नावली
- साक्षात्कार
- अवलोकन

६) केस स्टडी विधी

CamScanner
CamScanner

अध्याय-द्वितीय

राजस्थान प्रान्त की भौगोलिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राकृतिक दृष्टि से राजस्थान को तीन भागों में बाँटा जा सकता है.

१. पश्चिमी बालुका मैदान या थार मरुस्थल
२. अरावली श्रेणी और पहाड़ प्रदेश
३. पूर्वी मैदान
४. दक्षिणी–पूर्वी पठार

राजस्थान से निकलने प्रमुख नदियाँ

१. बाणगंगा नदी २) सुकेल नदी ३) जाखम नदी ४) सोम नदी ५) कांतली नदी
६. कोठारी नदी ७) साबरमती नदी

राजस्थान मे प्रमुख व्यवसाय एवं साधनः

१) कृषि २) उद्योग और खनिज

CamScanner
CamScanner

जयपुर राज्य का इतिहास तीन कालो में विभाजित है

१. प्राचीन काल २. मध्य काल ३. आधुनिक काल

राज्यस्थान के प्रसिध्द स्थल

१.जयपुर २.भरतपुर ३.जोधपुर ४.सवाईमाधोपुर

राज्यस्थान का सांगीतिक एवं सांस्कृतिक परिचय

१४ वीं शताब्दी से ही राजस्थान में सांस्कृतिक, साहित्यिक और राजनैतिक जागरण के साथ ही संगीत कला का सृजन भी आरंभ हो गया था। संगीत राजस्थान के राज दरबारों की शोभा था। यहाँ के कई राजा–महाराजा स्वयं भी श्रेष्ठ संगीतज्ञ थे।

सांस्कृतिक परिचय एवं प्रमुख त्यौहार :

१) बसंतपंचमी २) सूर्य सप्तमी ३) महाशिवरात्री ४) हाथी उत्सव ५) गणगौर
६) तीज ७) दीपावली ८) अन्नकूट ९) मकर संक्रान्ति

CamScanner
CamScanner

अध्याय-तृतीय

राजस्थान में लोकगायन का इतिहास एवं विकास-यात्रा

१. लोकगायन का इतिहास

पं. शारंगदेव ने (चौदहवीं शताब्धी) 'संगीत रत्नाकर' ग्रंथ में लिखा है।

''देशे देशे जनाना यह रूच्या हृदयरंजकः।
गनंच वादनं नृत्यं वृहददेशी व्यभिधियते।।''

अर्थात देश सभी भागों में छोटे–बडे लोग अपनी बोली में जिसे प्रेमपूर्वक रूचि के अनुसार गाकर, बजाकर तथा नृत्य कर अपना मन प्रसन्न कर सकते हैं, उसे देशी संगीत या लोक संगीत कहते है।

CamScanner
CamScanner

२. राजघरानों में लोकगायन की विकास यात्रा

जोधपूर का सांगितिक परिचय स्वतंत्रता से पूर्व जोधपूर मारवाड के नाम से जाना जाता था। मध्यकाल में यहॉ के रजवाडों को स्थायित्व मिला, इसके साथ ही उन्हें आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त हुई। मारवाड के रजवाडों ने जहॉ एक और शास्त्रीय संगीत को आश्रय दिया वहीं दूसरी और लोकसंगीत का भी विकास किया।

३. राजघरानों लोक गायन एवं लोकगीतों के प्रकार

अ) देवी देवताओं के लोकगीत

ब) धमाल लोकगीत

स) स्वागत एवं आमोद–प्रमोद लोकगीत

द) कलाली गीत

य) घूमर लोकगीत

र) ऋतुओं से सम्बधिंत लोकगीत

ह) ऐतिहासिक चरित्र प्रधान लोकगीत

CS CamScanner
CS CamScanner

अध्याय-चतुर्थ

राजस्थान प्रान्त में लोकगायन एवं लोकगीतों के प्रमुख स्वरुप एवं शैलियां

राजस्थान में लोकगीत की प्रमुख शैलियां

- भक्ति लोकगीत
- उत्सव लोकगीत
- प्रेम लोकगीत
- अनुष्ठान लोकगीत
- विविध लोकगीत
- लोरी
- लोक देवता लोकगीत
- दीयारी माता
- शितला माता
- जुहर जी
- सतीमाता
- गणगौर
- पाबूजी
- भोमिया
- घुडलागीत
- घूमर
- कठपुतली
- लंगुरिया

राजस्थान में लोकगायन के प्रमुख राजघराने

जयपुर– अतरौली घराना   डागर घराना   मेवाती घराना

CS CamScanner
CS CamScanner

राजस्थान की प्रमुख लोकगायन जातियां

- लंगा जाति
- माँगणियार जाति
- कालबेलिया जाति
- ढोली जाति
- मिरासी जाति
- ढाढी जाति

राजाओ द्धारा प्रदान विशेष उपनाम वाली जातियां

(अ) देहढडा जाति (ब) खंगारा जाति

- मांड गायन शैली
- जयपुर तमासा

लोकगायन में प्रयुक्त प्रमुख वाद्ययंत्र :

१) तार वाद्य २) अवनद्ध वाद्य ३) घन वाद्य ४) सुषिर वाद्य

राजस्थान के राजघरानों में बजाये जाने वाले प्रमुख लोकवाद्य

तत् वाद्य

१. सारंगी २. कमायचा ३. रबाव ४. रावणहत्था ५. सुर मण्डल

अवनद्ध वाद्य

१. नगाडा २. चंग ३. ढोल ४. ढपली ५. खंजरी

घन वाद्य

१. मंजीरा २. घुंघरू ३. खड़ताल ४. झांझ ५. चिमटा ६. करताल

सुषिर वाद्य

१. शहनाई २. बांसूरी ३. तुरही ४. हारमोनियम ५. कराणा

CamScanner
CamScanner

अध्याय-पंचम

राजस्थान मे लोकगायन के संरक्षण एवं विकास में राजघरानों, सरकारी प्रयास

लोक गायन के संरक्षण एवं विकास में राजघरानों के प्रयास :
लोकगायन के संरक्षण एवं विकास के सरकारी प्रयास
संस्थाओं का निर्माण
संगीत नाटक अकादमी
दूरदर्शन, आकाशवाणी रेडियों, राजस्थान टूरिजम जैसे सरकारी प्रयास

केन्द्र स्तर पर प्रयास

१. केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी
२. छात्रों को प्रोत्साहन छात्रवृतियां
३. जरूरत मंद कलाकारो को आर्थिक सहायता
४. जयपुर तथा जोधपुर के प्रमुख संस्थान

राज्य स्तर पर प्रयास

१. सुर संगम संस्था जयपुर
२. जवाहर कला केन्द्र जयपुर
३. राजस्थान संगीत नाटक अकादमी जोधपुर
४. लोकवाद्यों का संग्रहालय जोधपुर
५. ललित कला अकादमी जयपुर
६. रविन्द्र मंच जयपुर
७. आकाशवाणी जोधपुर

CS CamScanner
CS CamScanner

अध्याय-षष्टम

सारांश निष्कर्ष एवं सुझाव

इसकें अंतर्गथ संपूर्ण शोध कार्य के प्रश्चात जो परिणाम प्राप्त हुआ है उनको निष्कर्षों के रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

उपरोक्त सभी अध्यायों अध्ययन के पश्चात निष्कर्ष रूप में यह कह सकते है कि हर काल (युग) में तथा हर परिस्थिति में इन राजपूत वंशजों ने राजस्थान के लोक संगीत में लोकसंगीत के सरक्षण एवं विकास में अपना हर सम्भव योगदान दिया है, तथा राजस्थान लोकगायन के विकास एवं संरक्षण में राजघरानों की भूमिका में प्राकल्पना सकारात्मक सिध्द होती है। ऐसे लोक गायनों का संरक्षण अनिवार्य है क्योंकि ये मनमाना गीत नहीं हैं वे हमारे इतिहास और संस्कति का मौखिक पाठ हैं, जो प्रेम और भक्ति, संघर्ष और नवीनीकरण की कहानियां सुनाते है।

राजस्थान में लोकगायन के विकास एवं संरक्षण में राजघरानों की भूमिका में प्राकल्पना सकारात्मक सिध्द होती है। सरकार द्वारा उठाये गए कदम लोक गायन के विकास एवं संरक्षण में सहायक सिध्द हो रहे है। संगीत नाटक अकादमी द्वारा उन जरूरत मन कलाकारों को भी सहायता मिल रही है। जयपुर और जोधपुर राजघराने द्वारा कला के क्षेत्र में लोक जातीयों को संरक्षण व सहयोग प्राप्त हो रहा है। मेहरानगढ किले के म्यूजियम ट्रस्ट द्वारा योगदान दिया गया है एवं NGO's द्वारा सरहानीय कदम उठाये गए है किंतु इस पर बढे कार्यक्षेत्र पर कार्य होना चाहिए।

CamScanner
CamScanner

धन्यवाद

CamScanner
CamScanner